भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृत साहित्य

नंदिनी गुप्ता
शोधछात्रा
संस्कृत विभाग
ए0 पी0 सेन मेमोरियल गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 09.03.26
Approved: 24.07.26

नंदिनी गुप्ता

भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृत साहित्य

Vol. XVII, Sp. Issue Aug. 2026
Article No.29, Pg. 214-217

Similarity Check: 05%

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-apsmgpc-lkn-2026

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.029*

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सर्वाधिक प्राचीन, समृद्ध एवं वैज्ञानिक ज्ञान–परंपराओं में से एक है, जिसका मूल आधार संस्कृत साहित्य है। संस्कृत भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म, विज्ञान, नैतिक मूल्यों एवं जीवन–दृष्टि की संवाहक रही है। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतियाँ तथा विभिन्न दार्शनिक ग्रंथ भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्रोत हैं, जिनमें मानव जीवन के विविध आयामों–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, शिक्षा, चिकित्सा, गणित, खगोल, योग, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक समरसता, का व्यापक एवं व्यवस्थित विवेचन प्राप्त होता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार में संस्कृत साहित्य की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि संस्कृत साहित्य ने न केवल भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को सुरक्षित रखा है, बल्कि ज्ञान, नैतिकता, मानवीय मूल्यों तथा वैज्ञानिक चिंतन को भी पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित किया है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जहाँ मूल्यपरक शिक्षा, सतत विकास एवं सांस्कृतिक पहचान का महत्व निरंतर बढ़ रहा है, वहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्स्थापना और उसके मूल स्वरूप को समझने के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

यह शोध–पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत साहित्य के परस्पर संबंधों का विवेचन करते हुए इस तथ्य को रेखांकित करता है कि संस्कृत साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना, बौद्धिक विरासत तथा वैश्विक कल्याण की भावना का सशक्त आधार है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण, पुनरुत्थान एवं वैश्विक प्रसार के लिए

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.029

संस्कृत साहित्य का अध्ययन, अनुसंधान एवं व्यवहारिक अनुप्रयोग समय की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।

मुख्य शब्दः *ज्ञान परंपरा, संस्कृत साहित्य, वेद, प्राचीन शिक्षण प्रणाली, शोडश संस्कार, आयुर्वेद, महर्षि पाणिनी, नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा।*

परिचय

भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है इस प्रश्न के उत्तर में सबसे पहले वेदों का नाम ही आता है। भारतीय ज्ञान परंपरा की नींव वेदों में ही निहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य आयामों की बात करें तो वेद, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता, शड–दर्शन, रामायण, महाभारत, पुराण, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, व्याकरण आदि इन सबका एक विशिष्ट महत्व है। भारतीय ज्ञान परंपरा के आरंभ में वेदों को ही सबसे पहले लिया जाता है क्योंकि विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ वेद है और धर्म के मूल में वेदों का प्रथम स्थान है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य स्त्रोत या मुख्य आधार वेद और उपनिषद है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन समय से चलती आ रही बौद्धिक एवं ज्ञान की प्रवाह है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में विभिन्न देवताओं की स्तुति प्राप्त होती हैं जैसे अग्नि, इंद्र, वायु, सविता, विष्णु , वरुण, सरस्वती आदि। यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी कर्मकांड के विषय का वर्णन मिलता है परंतु वेदों में सिर्फ मंत्र ही नहीं अपितु इसके अतिरिक्त हमें वैदिक कालीन सामाजिक व राजनीतिक व आर्थिक बातों का भी ज्ञान प्राप्त होता है। यजुर्वेद में वैदिक कर्मकांड के इतिहास के दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। अथर्ववेद में शरीर को स्वस्थ रखने का ज्ञान प्राप्त होता है अथर्ववेद में रोगों के उपचार, स्वास्थ्य, सफलता प्राप्त करने का भी वर्णन बताया गया है। अथर्ववेद में विभिन्न रोगों को दूर करने के लिए विशेष प्रकार की औषधियां व प्रार्थना भी बताई गई है। अथर्ववेद के भूमि सूक्त में पृथ्वी के लिए कहा गया है "माता भूमि, पुत्रोऽहं पृथिव्याः" भूमि हमारी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूं। यह पवित्र विचार भारतीय ज्ञान परंपरा में वेदों की पवित्र दृष्टि को दर्शाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में धार्मिक बातों के अतिरिक्त राजनीतिक, ज्योतिष, गणित, अर्थशास्त्र, व्याकरण, छंद शास्त्र, अलंकार, आयुर्वेद, समाजशास्त्र, काव्य, भूगोल आदि विषयों पर भी गहन अध्ययन मिलता है। संस्कृत साहित्य को अधिकांश लोग धार्मिक ग्रंथों से जोड़ते हैं परंतु वास्तव में संस्कृत साहित्य का विस्तार धार्मिक ग्रंथो के अतिरिक्त भी है। संस्कृत साहित्य जीवन के हर क्षेत्र में अपनी दृष्टि रखता है। प्राचीन शिक्षण प्रणाली की विषय में बात करें तो प्राचीन भारत में शिक्षण कार्य मौखिक रूप से ही विद्यमान था। वेदों के संरक्षण के लिए श्रुति परंपरा का विशिष्ट महत्व था। शिष्य गुरु मुख से श्रवण कर पाठ को दोहराकर, प्रश्न पूछ कर और पाठ को कंठस्थ कर लेता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में सिर्फ धार्मिक अध्ययन को ही नहीं बल्कि विभिन्न शास्त्रों व विभिन्न विद्याओं के अध्ययन को भी बहुत अधिक महत्व दिया गया है। इसी वैदिक परंपरा व श्रुति परंपरा की समस्त ज्ञान को कंठस्थ करने के लिए वेदंगों की सहायता ली जाती थी। वेदांगों की सहायता से ही वेदों का ज्ञान प्राप्त होता था यह वेदांग है–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।

भारतीय ज्ञान परंपरा में मुख्य स्तंभों में वेदों के पश्चात अध्यात्म और दर्शन के विषय में देखें तो श्रीमद्भगवद्गीता व उपनिषद जैसे महान ग्रन्थ मनुष्य को परमात्मा व ब्रह्म तत्व सिद्धांतों के विषय का गहन अध्ययन कराते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता सिर्फ धार्मिक ग्रंथ नहीं है बल्कि यह वर्तमान में श्रीमद् भगवद् गीता की प्रासंगिकता में यह कह सकते है कि यह ग्रन्थ सभी के लिए मार्गदर्शक है। गीता हमें कर्म और मन को नियंत्रित रखना सिखाती है व हर व्यक्ति को कर्मशील व निर्णय क्षमता लेने का ज्ञान भी गीता सिखाती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद जो एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है उससे संबंधित चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथ जो केवल चिकित्सा से नहीं बल्कि प्राकृतिक पदार्थों के द्वारा रोगों के उपचार पद्धति को बताते हैं। महर्षि सुश्रुत के द्वारा सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा पर केंद्रित विषय है। सुश्रुत संहिता शरीर के आंतरिक संरचना पर भी प्राचीन चिकित्सा पद्धति पर भी ध्यान देती थी। आचार्य वाग्भट के द्वारा अष्टांग हृदयम आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध

ग्रंथ है जिसमें औषधि और शल्य चिकित्सा दोनों का ही वर्णन प्राप्त होता है। यह भी आयुर्वेद का बहुत प्रसिद्ध ग्रंथ माना गया है। "वसुधैव कुटुम्बकम" भारतीय ज्ञान परंपरा का वह अनमोल ज्ञान है जो भारत की उदारता व वैश्विक दृष्टि को परिभाषित करता है ।

भारतीय ज्ञान परंपरा में इसी श्रेणी में कौटिल्य का अर्थशास्त्र भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अनमोल व महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह कूटनीति, सुशासन का, प्राचीन ज्ञान का एक व्यापक और व्यवस्थित ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ आधुनिक प्रबंधन के लिए एक मार्गदर्शक है। इसके आगे विज्ञान और गणित में आर्यभट्ट और भास्कराचार्य ने अपने सिद्धांतों को सामने रखा। इतना ही नहीं इन्होंने गणित में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। भास्कराचार्य 12वीं सदी के महान खगोलशास्त्री व गणितज्ञ थे जिन्होंने खगोल विज्ञान और गणित में अपनी प्रमुख रचना "सिद्धांत शिरोमणि" जैसे ग्रंथ में अपना अमूल्य योगदान दिया।

प्राचीन ज्ञान परंपरा में ज्योतिष को वेदों के चक्षु अर्थात नेत्र कहा गया है। ज्योतिष में सिर्फ नक्षत्र और भविष्यफल बताने की विद्या ही नहीं बल्कि खगोल विज्ञान व खगोलीय पिंडों की गति का भी वर्णन प्राप्त होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा व संस्कृत साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण आचार्य पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी संस्कृत व्याकरण का सबसे वैज्ञानिक और प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। पाणिनि का व्याकरण एक व्यवस्थित ग्रंथ है जो कंप्यूटर प्रोग्रामिंग की भाषाओं की तरह कार्य करती है। इस ग्रंथ में माहेश्वर सूत्र व सूत्र शैली का उपयोग किया गया है। पाणिनि भारतीय ज्ञान परंपरा के उन प्रमुख स्तंभों में से एक है जिन्होंने केवल संस्कृत भाषा को व्यवस्थित नहीं किया बल्कि संसार को एक वैज्ञानिक भाषा विज्ञान व व्याकरण भी दिया।

प्राचीन ज्ञान परंपरा में वेद कालीन समाज में स्त्री शिक्षा भी उल्लेख मिलता है। पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों की भी शिक्षा का वर्णन मिलता है। वैदिक काल में कई विदुषी स्त्रियों का वर्णन मिलता है जिसमें आत्रेयी, लोपामुद्रा, गार्गी, वागाम्भृणी आदि मंत्र दृष्टि विदुषियां थी। जिनके मंत्र ऋग्वेद में आज भी प्राप्त है। भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों को भी शिक्षा का अधिकार दिया जाता था।

भारतीय ज्ञान परंपरा में और संस्कृत साहित्य के विषय में बात करे तो शोडश संस्कारों के विषय में वर्णन अवश्य मिलता है। शोडश संस्कार भारतीय ज्ञान परंपरा व संस्कृत साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि संस्कारों को एक माध्यम बताया गया है जिससे एक व्यक्ति समाज में संस्कारों के माध्यम से सुसंस्कृत व परिष्कृत होता है व समाज में एक उत्तरदायित्व नागरिक बनता है ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति और समाज में एक संबंध है। संस्कार ही एक समाज को सुसंस्कृत और अनुशासित बनाता है। वे संस्कार है जो एक समाज के लिए एक मनुष्य को उत्तम बनाता है। मनुष्य का जीवन संस्कार से ही परिशुद्ध होता है। संस्कारों से मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास ही नहीं होता बल्कि उसका सामाजिक तथा धार्मिक जीवन में समृद्ध बनता है।

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य जिसमें कर्म तथा धर्म के रूप में यह ग्रंथ प्रसिद्ध है यह सिर्फ एक महाकाव्य ही नहीं बल्कि नीति शास्त्र और इतिहास से संबंधित ग्रंथ भी है जिसमें सामाजिक प्रबंधन को, कौशल विकास को, कला का विस्तार रूप से वर्णन मिलता है और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्राचीन काल से किस तरह से चलती आ रही है इसका वर्णन भी हमें इन ग्रंथो में मिलता है। गुरु शिष्य परंपरा और गुरुकुल परंपरा यहां वर्णन इस प्राचीन ग्रंथो में भी दिखाई देता है। यूनेस्को ने श्रीमद्भगवद्गीता और भरतमुनि के नाट्य शास्त्र को मेमोरी आफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया है जो भारत की सांस्कृतिक सांस्कृतिक विरासत के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। मेमोरी ऑफ़ वर्ल्ड रजिस्टर यूनेस्को द्वारा दुनिया के महत्वपूर्ण दस्तावेजों को बचाने के लिए और वह उपलब्ध हो सके और मेमोरी ऑफ़ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होने वाले सभी ग्रंथ धरोहर के रूप में सुरक्षित रख सके इसलिए उनको शामिल किया जाता है।

इसी भारतीय ज्ञान परंपरा संस्कृत लौकिक साहित्य में भी पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथ व्यवहारिक जीवन व नैतिक विज्ञान को सिखाते हैं। महाकवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और रघुवंष जैसे रचनाओं में पर्यावरण और

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.029

स्त्री चिंतन पर बहुत सुंदर वर्णन मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में लौकिक साहित्य में पर्यावरण पर भी अधिक महत्व दिया गया सिर्फ इतना ही नही वेद कालीन समाज में पर्यावरण व प्रकृति को पूजनीय माना गया है। जल, वृक्षों और पांच तत्वों के महत्व को भी बताया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत साहित्य के लौकिक साहित्य में पंचतंत्र जैसी कहानियां बहुत ही लोकव्यवहारिक हैं। इस पुस्तक में नेतृत्व क्षमता विकास करने का भी एक तरीका बताया गया है।

प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता में प्रकृति को ज्यादा महत्व दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को एक भौतिक कि नहीं बल्कि चेतन और पूजनीय के रूप में देखा जाता है। वैदिक काल में वेदों में, उपनिषदों में, पुराणों में प्रकृति को माता कहा गया है। अथर्ववेद में भूमि सूक्त में पृथ्वी को माता कहा गया है व सृष्टि के अधिकतर साधनों को पूजनीय माना जाता था। वृक्षों के साथ–साथ नदियों को भी पवित्र तथा माता की उपाधि दी गयी है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा के इस ज्ञान को व परंपरा को आधुनिक समय में पर्यावरण व प्रकृति के लिए की दिशा में एक मार्गदर्शन दिखाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के भारतीय संस्कृति में मानव जीवन का क्या प्रयोजन है यह चार पुरुषार्थों के माध्यम से इसमें समझाया गया है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चार पुरुषार्थों को भारतीय संस्कृति में महत्व दिया गया है कि मनुष्य पूरा जीवन श्रम करके व्यतीत करता है और अंत में मोक्ष को प्राप्त करके जीवन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्वकल्याण एवं विश्व बंधुत्व की एक सुंदर भावना को भी महत्व दिया गया है नीचे दिए गए इस श्लोक को हम अधिकतर सुनते आते हैं–

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।"

विश्व कल्याण व विश्व में सभी की रक्षा के लिए सभी के कल्याण की भावना के उद्देश्य से भारत की संस्कृति व भारतीय ज्ञान परंपरा हमें यह सिखाती है कि मनुष्य हो या पशु या किसी भी जीव के लिए हमें हमेशा कल्याण की प्रार्थना करनी चाहिए वह कल्याण की ही भावना रखनी चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा में उपलब्ध अधिकतर ग्रंथ मानवीय गुणों को ही समझाते हैं व सभी के लिए कल्याण के लिए कामना करते हैं।

आधुनिक समय में भारतीय ज्ञान परंपरा हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है भारत की नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य प्राचीन शिक्षा का आधुनिक शिक्षा से मेल कराना है और जिसका उद्देश्य छात्रों को वैश्विक नागरिक बनाने के साथ–साथ अपनी भारतीय संस्कृति की विरासत के प्रति जागरूक करना भी है।

आधुनिक समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक समय में छात्रों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है पर इसका संरक्षण के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा पर शिक्षा और शोध कार्य व्यापक रूप से प्रचार प्रसार करने से ही हम इसको संवर्धित कर सकते हैं और आज के समय भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास धीरे–धीरे हो रहा है।

संदर्भ

1. भारतीय संस्कृति, डॉ प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2016, पांचवा संस्करण।
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, इलाहबाद, १६८०
3. वेदकालीन समाज–डॉ शिवदत्त ज्ञानी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2014
4. https://timesofindia.indiatimes.com/india/bhagavad-gita-natyashastra-unesco-world-register-manuscript-inscription-world-heritage-day/photostory/120408511.cms?picid=120408558
5. Bhagavad Gita and Natyashastra added to UNESCO's Memory of World Register, 19 April 2025.